قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया फिर तुम्हें क्या काम सौंपा गया है, ऐ फरिश्तो? वो केहने लगे हम

اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً

मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं। ताके हम उन पर मिट्टी

مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾

के पथ्थर बरसाएं। जो तेरे रब के पास हद से आगे बढ़ने वालों के लिए निशानज़दा हैं।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

फिर हम ने ईमान वालों को निकाल लिया जो उस बस्ती में थे।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا

फिर हम ने उस बस्ती में मुसलमानों के एक घर के सिवा नहीं पाया। और हम ने

فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾

उस में निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) में भी जब के हम ने उन्हें फिरऔन की तरफ रोशन दलील दे कर रसूल

مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

बना कर भेजा। फिर उस ने अरकाने सल्तनत के बल पर रूगरदानी की, और बोला के ये तो जादूगर या मजनून है।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

फिर हम ने उस को और उस के लशकरों को पकड़ लिया, फिर हम ने उन को फैंक दिया समन्दर में जब के उन पर इल्ज़ाम रखा

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾

गया। और क़ौमे आद में जब के हम ने उन पर बाँझ करने वाली हवा भेजी।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾

जिस चीज़ पर भी वो गुज़रती थी उसे गली हुई चीज़ के मानिन्द कर छोड़ती थी।

وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا

और क़ौमे समूद में जब उन से कहा गया के तुम एक वक़्त तक मज़े उड़ा लो। फिर उन्हों ने

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾

अपने रब के हुक्म से सरकशी की, फिर उन को कड़क ने पकड़ लिया इस हाल में के वो देख रहे थे।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

फिर उन्हें उठने की भी ताक़त नहीं थी और वो बदला भी नहीं ले सकते थे।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾ ع ٣

और क़ौमे नूह को इस से पेहले। यक़ीनन वो नाफरमान क़ौम थी।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ

और आसमान को हम ने क़ुदरत से बनाया है, और यक़ीनन हम ही वसीअ करने वाले हैं। और ज़मीन को

فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَىْءٍ

हम ने बिछाया, फिर हम कितना अच्छा बिछाने वाले हैं? और हर चीज़ के

خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا

जोड़े हम ने पैदा किए ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर तुम अल्लाह की तरफ

اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا

भागो। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। और तुम अल्लाह के साथ

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ

दूसरे माबूद मत बनाओ। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। इसी तरह

مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ

उन लोगों के पास भी जो उन से पेहले थे कोई रसूल नहीं आया, मगर उन्हों ने कहा के ये तो जादूगर है

اَوْ مَجْنُوْنٌ ۚ﴿٥٢﴾ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۚ﴿٥٣﴾

या पागल है। क्या उन्हों ने एक दूसरे को इस की वसीयत कर रखी है? बल्के ये शरीर क़ौम है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۖ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى

तो आप उन से ऐराज़ कीजिए, अब आप पर कोई मलामत नहीं। और आप नसीहत करते रहिए, यक़ीनन नसीहत

تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ

ईमान वालों को नफा देगी। और मैं ने जिन्नात और इन्सान पैदा नहीं किए मगर इस लिए

اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ

ताके वो मेरी इबादत करें। मैं उन से रोज़ी नहीं चाहता और न मैं ये चाहता हूँ

اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

के वो मुझे खाना दें। यक़ीनन अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, वो मज़बूत क़ूव्वत वाला है।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ

फिर उन लोगों के लिए जो ज़ालिम हैं बारी है उन के साथियों की बारी की तरह,

فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

फिर वो जल्दी न मचाएँ। फिर हलाकत है काफिरों के लिए

ع مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

उन के उस दिन से जिस से उन्हें डराया जा रहा है।

اٰيَاتُهَا ٤٩ ۔ (٥٢) سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ (٧٦) ۔ رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ४९ आयतें हैं ۔ सूरह तूर मक्का में नाज़िल हुई ۔ और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِىْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾

तूर की क़सम! और किताब की क़सम जो लिखी हुई है। जो फैलाए हुए कागज़ में है।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ

बैते मामूर की क़सम। बुलन्द छत की क़सम। और दरयाए शोर की क़सम,

الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهٗ

जो पुर है। यक़ीनन तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़ेअ होने वाला है। उस को

مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِيْرُ

कोई दफा नहीं कर सकता। जिस दिन आसमान कपकपा कर लरज़ेगा। और पहाड़

الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

चलने लगेंगे। फिर उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

وقف لازم الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ

उन के लिए जो दिल्लगी में खेल रहे हैं। जिस दिन उन्हें धक्के

اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِىْ كُنْتُمْ بِهَا

दे कर जहन्नम की आग की तरफ लाया जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो आग है जिस को तुम

تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾

झुठलाते थे। क्या ये जादू है या तुम देखते नहीं हो?

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ

तुम उस में दाखिल हो जाओ, फिर सब्र करो या सब्र न करो, तुम पर बराबर है।

اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

तुम्हें सज़ा दी जाएगी उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग

فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ

जन्नतों में और नेअमतों में होंगे। मज़ा कर रहे होंगे उस में जो उन को उन के रब ने दिया है। और उन के

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا

रब ने उन को आग के अज़ाब से बचा लिया है। (कहा जाएगा के) तुम खाओ, पियो, मुबारकबादी है उन आमाल की

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ

वजह से जो तुम करते थे। वो लोग सफ बसफ रखे हुए तख्तों पर टेक लगाए हुए होंगे।

وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ

और हम उन का खूबसूरत बड़ी आँखों वाली हूरों के साथ निकाह कराएंगे। और वो जो ईमान लाए और उन की जुर्रीयत

ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ

ने ईमान में उन की पैरवी की तो हम उन के साथ उन की जुर्रीयत को मिला देंगे, और हम उन के अमल में

مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

से कुछ भी उन के लिए कम नहीं करेंगे। हर शख्स रुका रहेगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

और हम उन्हें बराबर देते रहेंगे मेवे और उन का मरगूब गोश्त।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾

एक दूसरे से छीना झपटी करेंगे वहाँ ऐसे प्याले में जिस में न बकना है और न गुनाह की बातें हैं।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾

और उन पर उन के ऐसे खिदमतगार लड़के चक्कर लगाते रहेंगे गोया वो छुपाए हुए मोती हैं।

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا

और उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर पूछेंगे। कहेंगे के

اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا

हम इस से पेहले हमारे घर वालों में डरते रेहते थे। फिर अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया

وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ

और हमें आग के अज़ाब से बचा लिया। हम इस से पेहले उसी को पुकारते थे।

اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ ع ٢

यक़ीनन वो लुत्फ करने वाला, बड़ा महरबान है। इस लिए आप नसीहत कीजिए, फिर आप अपने रब की नेअमत

رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ

की वजह से न काहिन हो और न पागल हो। क्या ये लोग केहते हैं के ये तो शाइर है?

نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ

हम उस के मुतअल्लिक़ मौत के हादसे के मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो, फिर मैं भी

مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ

तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। क्या उन को उन की अक़्लें इस का हुक्म

بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ

देती हैं या ये लोग शरीर ही हैं? क्या वो केहते हैं के इस नबी ने ये कुरआन खुद कहा है?

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا

बल्के ये ईमान नहीं लाते। तो उन्हें चाहिए के उस जैसा कोई कलाम ले आएं अगर ये

صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

सच्चे हैं। क्या ये बग़ैर किसी चीज़ के खुद पैदा हो गए या ये खुद पैदा करने वाले हैं?

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या उन्हों ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? बल्के ये यक़ीन नहीं रखते।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

या उन के पास तेरे रब के खज़ाने हैं या ये हाकिम हैं?

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ

या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस में (चढ़ कर) वो सुन लेते हैं? तो उन को चाहिए के उन का सुनने वाला

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

कोई रोशन दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे हैं?

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ

या आप उन से मुआवज़े का सवाल करते हैं के ये उस तावान में दबे जा रहे हैं? क्या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ

उन के पास ग़ैब का इल्म है के ये लिख लेते हैं? या ये मक्र करना

كَيْدًا ؕ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ

चाहते हैं? फिर जो काफिर हैं उन्ही के खिलाफ तदबीर की जाएगी। क्या उन का

اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

कोई माबूद है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पाक है उन से जिन्हें वो शरीक बता रहे हैं।

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ

और अगर ये आसमान से गिरता हुवा टुकड़ा देख लें, तो कहेंगे के ये तो तेह बतेह

مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ فِيْهِ

बादल है। फिर आप उन्हें छोड़ दीजिए यहाँ तक के वो मिलें अपने उस दिन से जिस में उन पर

يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِىْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا

साइक़ा पड़ेगी। जिस दिन उन की मक्कारी उन के कुछ भी काम नहीं आएगी

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا

और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और उन ज़ालिमों के लिए इस के अलावा भी

دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ

अज़ाब होगा, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और आप सब्र कीजिए अपने रब

لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ

के हुक्म की वजह से, फिर ज़रूर आप हमारी निगाहों के सामने हो और आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए

تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾ ع ٢

जिस वक्त आप उठते हो। और रात में भी उस की तस्बीह कीजिए और सितारों के गुरूब होने पर भी।

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ (٢٣) (٥٣)

اٰيَاتُهَا ٦٢ رُكُوْعَاتُهَا ٣

सूरह नज्म मक्का में नाज़िल हुई (२३) (५३)

उस में ६२ आयतें हैं और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾

सितारे की क़सम जब वो गिरे। के तुम्हारे साथी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न भूले हैं, न भटके हैं।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝٣ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤

और वो अपनी ख्वाहिश से नहीं बोलते। ये तो सिर्फ वही है जो उन की तरफ वही की जाती है।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝٦ وَهُوَ

उन को सख्त कूव्वतों वाले फरिशते ने सिखाया है। जो ताक़तवर है, फिर वो पूरा नमूदार हुवा। इस हाल में

بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨ فَكَانَ قَابَ

के वो आसमान के बुलन्द किनारे में था। फिर वो क़रीब आया, फिर नीचे उतरा। फिर दो कमान के बराबर

قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝١٠

या उस से भी कम फासला रेह गया। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ वही की जो उस ने वही की।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢

दिल ने झूठ नहीं बोला जो उस ने देखा। क्या फिर तुम उन से झगड़ते हो उस पर जो वो देख रहे हैं?

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝١٣ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝١٤

यक़ीनन उन्हों ने एक दूसरी मरतबा भी उस (फरिशते) को देखा है। सिदरतुल मुन्तहा के पास।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝١٥ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝١٦

जिस के पास जन्नतुल मअवा है। जब के सिदरतुल मुन्तहा को ढांप रही थीं वो चीज़ें जो उस को ढांप रही थीं।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝١٧ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ

निगाहे मुबारक न हटी, न (मरई से) आगे बढ़ी। यक़ीनन आप ने अपने रब की बड़ी निशानियों में से

الْكُبْرٰى ۝١٨ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝١٩ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ

देखा। क्या फिर तुम ने देखा लात और उज़्ज़ा और तीसरे मनात

الْاُخْرٰى ۝٢٠ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝٢١ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ

को? क्या तुम्हारे लिए बेटे और अल्लाह के लिए बेटियाँ? यक़ीनन ये तो बहोत बुरी

ضِيْزٰى ۝٢٢ اِنْ هِىَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ

तक़सीम है। ये तो सिर्फ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादाओं ने

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

रख रखे हैं, जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। वो तो सिर्फ गुमान

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ

के पीछे चलते हैं और उस के पीछे जिस की नफ्स ख्वाहिश करते हैं। और यक़ीनन उन के पास उन के रब

رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ؕ ٢٣ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ٢٤ ۖ فَلِلّٰهِ

ही की तरफ़ से हिदायत आई है। क्या इन्सान को मिलता है जो भी वो चाहे? फिर अल्लाह की मिल्क

الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ٢٥ ۧ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ

है आखिरत भी और पेहली दुन्या भी। और कितने फरिशते हैं आसमानों में के

لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ

जिन की सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती मगर इस के बाद के अल्लाह इजाज़त दे

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ٢٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

जिस के लिए चाहे और पसन्द करे। यक़ीनन जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ٢٧ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

वो फरिशतों को लड़कियों का नाम देते हैं। हालाँके उन के पास उस की कोई

مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ

दलील नहीं। वो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हैं। और गुमान हक़्

لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ٢٨ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ

के मुक़ाबले में कुछ भी काम नहीं देता। फिर आप उस से ऐराज़ कीजिए जो हमारे ज़िक्र से

عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ٢٩ ؕ ذٰلِكَ

मुंह मोड़ता है और जो सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी को चाहता है। ये

مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

उन का मबलग़े इल्म है। यक़ीनन तेरा रब वो खूब जानता है उस को जो अल्लाह के

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ٣٠ وَلِلّٰهِ

रास्ते से भटक गया और वो खूब जानता है उस को भी जिस ने हिदायत पाई। और अल्लाह के लिए

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا

वो तमाम चीज़ें हैं जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं। ताके अल्लाह सज़ा दे उन को जिन्हों ने

بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ٣١ ۚ اَلَّذِيْنَ

बुरे आमाल किए और अल्लाह अच्छा बदला दे उन को जिन्हों ने नेकियाँ कीं। उन को जो

يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ

बड़े गुनाहों से और बेहयाई के कामों से बचते हैं, सिवाए छोटे गुनाह के।

اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ

यक़ीनन तेरा रब वसीअ मग़फिरत वाला है। वो तुम्हें खूब जानता है जब के उस ने तुम्हें

مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ

ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँ के पेटों में जनीन थे।

ع فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ

फिर तुम अपने नुफूस को मुज़क्का मत बताओ। वो खूब जानता है उस को जो मुत्तक़ी है। क्या आप ने

الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ

देखा उस शख्स को जिस ने ऐराज़ किया? और उस ने थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया? क्या उस के पास

عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ

ग़ैब का इल्म है, फिर वो देख रहा है? क्या उसे खबर नहीं दी गई उन चीज़ों की जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में

مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ

हैं? और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में हैं, जिन्हों ने (रिसालत का हक़) अदा कर दिया। ये के कोई बोझ उठाने

وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और ये के इन्सान को वही मिलेगा जो उस ने सई की।

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾

और उस की सई अनक़रीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾

और ये के तेरे रब की तरफ पहोंचना है। और वही हंसाता है और वही रुलाता है।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ

और वही मौत देता है और वही ज़िन्दगी देता है। और उसी ने जोड़े पैदा किए,

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ

मर्द को भी और औरत को भी। एक नुत्फे से जो डाला जाता है। और ये के उसी के ज़िम्मे

النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ

दूसरी मरतबा पैदा करना है। और वही ग़नी करता है और वही मुफलिस बनाता है। और वो

هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادًا ِۨ الْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾

शिअरा का रब है। और उसी ने पेहले आद को हलाक किया।

وَثَمُوْدَاۡ فَمَآ اَبْقٰی ﴿۵۱﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ

और समूद को हलाक किया, फिर किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा। और उस ने उस से पेहले क़ौमे नूह को हलाक किया। यक़ीनन

كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَ اَطْغٰی ﴿۵۲﴾ وَ الْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰی ﴿۵۳﴾

वो सब से ज़्यादा ज़ुल्म करने वाले और सब से ज़्यादा शरीर थे। और उसी ने उलट दी जाने वाली बस्ती को पटख दिया।

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰی ﴿۵۴﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰی ﴿۵۵﴾

फिर उस को ढांपा (उन पथ्थरों ने) जिस ने उन को ढांपा। फिर तू अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत पर झगड़ेगा?

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿۵۷﴾

ये पेहले डराने वालों में से एक डराने वाला है। क़रीब आने वाली क़रीब आ पहोंची।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿۵۸﴾ اَفَمِنْ هٰذَا

उस को अल्लाह के सिवा कोई दूर नहीं कर सकता। क्या फिर इस

الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ تَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿۶۰﴾

बात से तुम तअज्जुब करते हो? और हंसते हो और रोते नहीं हो?

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿۶۱﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿۶۲﴾ السجدة ۃ ع

और तकब्बुर करते हो? तो अल्लाह को सज्दा करो और उस की इबादत करो। السجدة ۱۳

اٰيَاتُهَا ۵۵ (۵۴) سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ (۳۷) رُكُوْعَاتُهَا ۳

उस में ५५ आयतें हैं सूरह क़मर मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿۱﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً

क़यामत क़रीब आ गई और चाँद दो टुकड़े हो गया। और अगर काफ़िर कोई निशानी देख लें तो

يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿۲﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا

ऐराज़ करते हैं और केहते हैं के ये जादू है जो हमेशा से चला आ रहा है। और उन्हों ने झुठलाया और अपनी

اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿۳﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ

ख्वाहिश के पीछे चले और हर अम्र ठेहेरने वाला है। यक़ीनन उन के पास इतनी खबरें आ चुकी हैं

الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿۴﴾ حِكْمَةٌ ۢ بَالِغَةٌ فَمَا

जिन में (काफी) इबरत है। इन्तिहाई दरजे की हिक्मत है, फिर डराने

وقف لازم

تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ

वाले भी कुछ काम नहीं आए। इस लिए आप उन से ऐराज़ कीजिए, जिस दिन एक पुकारने वाला नागवार चीज़ की

اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ

तरफ पुकारेगा। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी, वो क़ब्रों से निकल रहे

مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧ مُّهْطِعِيْنَ

होंगे गोया के वो फैली हुई टिड्डियाँ हैं। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे

اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨ كَذَّبَتْ

बुलाने वाले की जानिब। काफिर लोग कहेंगे के ये तो बड़ा सख्त दिन है। उन से पेहले

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ

क़ौमे नूह ने भी झुठलाया, फिर उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और बोले ये तो मजनून है और उस को

وَّازْدُجِرَ ۝٩ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

झिड़क दिया गया। फिर उस ने अपने रब को पुकारा के मैं मग़लूब हूँ, तू मेरी नुसरत फरमा।

فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١ وَّفَجَّرْنَا

फिर हम ने आसमान के दरवाज़े लगातार बरसने वाले पानी के साथ खोल दिए। और हम ने

الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

ज़मीन से चशमे जारी कर दिए, फिर पानी एक हुक्म पर मिल गया जो पेहले से मुतअय्यन कर दिया गया था।

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को तख्तियों वाली और कीलों वाली कशती पर सवार करा दिया। जो चल रही थी हमारी निगाहों के

جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً

सामने। उस के इन्तिक़ाम के लिए जिस की नाशुकरी की गई। यक़ीनन हम ने उस को एक निशानी के तौर पर छोड़ दिया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٦ وَلَقَدْ

क्या फिर कोई नसीहत हासिल करने वाला है? फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧ كَذَّبَتْ

हम ने इस कुरआन को याद करने के लिए आसान किया, तो क्या है कोई याद करने वाला? क़ौमे आद

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٨ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

ने झुठलाया, फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन हम ने उन पर

رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ

तूफानी ठन्डी हवा लगातार नहूसत वाले दिन में भेजी। जो इन्सानों को

النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ

(उचक) कर फैंक रही थी गोया के वो इन्सान अखड़े हुए खजूर के तने हैं। फिर मेरा अज़ाब

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन हम ने इस कुरआन को हिफ्ज़ के लिए (नसीहत के लिए) आसान किया, फिर क्या है कोई

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا ع ٨

हिफ्ज़ करने वाला (नसीहत हासिल करने वाला)? क़ौमे समूद ने डराने वालों को झुठलाया। फिर उन्हों ने कहा के क्या

مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

हम में से एक इन्सान के हम पीछे चलें? यक़ीनन हम तब तो गुमराही और दीवानगी में होंगे।

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾

क्या हमारे दरमियान में से इसी पर ये ज़िक्र डाला गया? बल्के ये तो झूठा है, अकड़ने वाला है।

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا

जल्द ही कल को ये जान लेंगे के कौन झूठा, अकड़ने वाला है। हम ऊँटनी उन के

النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ

इम्तिहान के लिए भेजने वाले हैं, इस लिए आप उन के मुतअल्लिक़ मुन्तज़िर रहिए और सब्र कीजिए। और उन को

اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا

खबर दे दीजिए के पानी उन के दरमियान तक़सीम है। हर पीने की बारी पर हाज़िर होना है। पस उन्हों ने

صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

अपने साथी को पुकारा, फिर वो तलवार ले कर आया, फिर उस ने ऊँटनी के पैर काट दिए। फिर मेरा अज़ाब और डराना

وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا

कैसा रहा? यक़ीनन हम ने उन पर एक ही चीख को भेजा, फिर वो बाड़

كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

के सूखे भूसे की तरह हो गए। यक़ीनन हम ने इस कुरआन को नसीहत (याद) के लिए आसान किया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

फिर क्या है कोई नसीहत हासिल (याद) करने वाला? क़ौमे लूत ने डराने वालों को झुठलाया।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ نَجَّيْنٰهُمْ

यक़ीनन हम ने उन पर पथ्थर बरसाने वाली तेज़ हवा का अज़ाब भेजा, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वालों पर। जिन को हम ने

بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ

नजात दी रात के पिछले पेहेर में। हमरी तरफ से नेअमत के तौर पर। इसी तरह हम बदला देते हैं उस को जो

شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

शुक्रगुज़ार होता है। यक़ीनन उन्हों ने उन को हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्हों ने डराने वालों के बारे में शक किया।

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

और लूत (अलैहिस्सलाम) को फुसलाया उन्हों ने उन के मेहमानों से, फिर हम ने उन की आँखों को मेट दिया, फिर तुम मेरा अज़ाब

عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ

चखो और मेरे डराने को चखो। यक़ीनन उन के पास सुबह के वक़्त दाइमी अज़ाब आ चुका सूरज

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا

निकलते हुए। फिर मेरे अज़ाब को और मेरे डराने को चखो। यक़ीनन हम ने

ع ٢ ١٨ ٩ اَلْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ

कुरआन को हिफ्ज़ कि लिए आसान किया, फिर क्या है कोई हिफ्ज़ करने वाला? यक़ीनन

جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

आले फिरऔन के पास भी डराने वाले आए। जिन्हों ने हमारी तमाम आयतों को झुठलाया,

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ

फिर हम ने उन को एक कुदरत वाले ज़बर्दस्त के पकड़ने की तरह पकड़ लिया। क्या तुम्हारे कुफ्फार उन लोगों से बेहतर

مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ

हैं या तुम्हारे लिए किताबों में बराअत है? या ये केहते हैं के हम इकट्ठे हैं,

جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

कामयाब हो जाएंगे? अनक़रीब उन इकट्ठे होने वालों को शिकस्त दी जाएगी और ये पुश्त फेर कर भागेंगे।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

बल्के क़यामत उन के वादे का वक्त है और क़यामत बहोत ज़्यादा खौफनाक और बड़ी कड़वी है।

وقف لازم اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ

यक़ीनन मुजरिम गुमराही और आग में होंगे। जिस दिन उन को

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا

आग में उन के चेहरों के बल घसीटा जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम दोज़ख का अज़ाब चखो। यक़ीनन हम

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ

ने हर चीज़ को मिक़दार से पैदा किया है। और हमारा हुक्म नहीं मगर एक ही मरतबा

كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ

आँख के पलक झपकने की तरह। यक़ीनन हम ने तुम्हारे हममस्लकों को हलाक किया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ

फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? और हर चीज़ जो उन्हों ने की दफ्तरों में लिखी हुई है। और हर

صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ

छोटी और बड़ी हरकत लिखी हुई है। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग जन्नतों और नेहरों में

وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع ١٥

होंगे। सच्चाई की जगह में होंगे कुदरत वाले बादशाह के पास।

اٰيَاتُهَا ٧٨ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ (٩٧) رُكُوْعَاتُهَا ٣

और ३ रूकूअ हैं सूरह रहमान मदीना में नाज़िल हुई उस में ७८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ

रहमान ने कुरआन की तालीम दी। उस ने इन्सान को पैदा किया। उस ने

الْبَيَانَ ﴿٤﴾ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ

उसे बोलना सिखलाया। चाँद और सूरज एक हिसाब से चल रहे हैं। और बेल

وَ الشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾

और दरख्त अल्लाह को सज्दा करते हैं। और उस ने आसमान बुलन्द किया और उस ने तराजू रख दिया।

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

(हुक्म दिया) के तुम तोलने में ज़्यादती मत करो। और इन्साफ के साथ ठीक तोला करो

وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾

और तोलने में कम कर के मत दो। और उस ने मख्लूक़ के लिए ज़मीन बनाई।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۪ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١ وَالْحَبُّ

जिस में मेवे हैं और खजूर हैं ग़िलाफ वाले। और अनाज है

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝١٢ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

भूसे वाला और खुशबूदार फूल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस

تُكَذِّبٰنِ ۝١٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝١٤

नेअमत को झुठलाओगे? उस ने इन्सान को पैदा किया ठीकरी की तरह खनखनाती मिट्टी से।

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝١٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

और उस ने जिन्नात को पैदा किया आग की लपट से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٦ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝١٧

नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो दोनों मशरिक़ का रब है और दोनों मग़रिब का रब है।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٨ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उस ने दो समन्दर मिला कर चलाए

يَلْتَقِيٰنِ ۝١٩ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۝٢٠ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

जो बाहम मिलते हैं। हालांके उन दोनों के दरमियान में एक आड़ है के एक दूसरे से तजावुज़ नहीं करते। फिर (ऐ इन्सानो और

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢١ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝٢٢

जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٣ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उस के हैं समन्दर में

النصف ع ٢٥ ١

فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝٢٤ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٥

पहाड़ों जैसे ऊँचे जहाज़। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝٢٦ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ

हर वो चीज़ जो ज़मीन पर है फना होने वाली है। और तेरे अज़्मत और इज़्ज़त वाले रब का

ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝٢٧ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

चेहरा बाक़ी रहेगा। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को

تُكَذِّبٰنِ ۝٢٨ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

झुठलाओगे? उसी से माँगते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

हर दिन वो एक शान (हाल) में होता है। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अनक़रीब हम तुम्हारे लिए फारिग़ होंगे ऐ इन्सानों और जिन्नात की दोनों जमाअतो! फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ

रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? ओ इन्सानों और जिन्नात की जमाअत! अगर तुम को ये क़ुदरत है

اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

के आसमानों और ज़मीन की हुदूद से कहीं बाहर निकल जाओ,

فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो तुम सूराख कर के निकल जाओ। तुम निकल नहीं सकते मगर परवानअे इजाज़त से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!)

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ

तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तुम्हारे ऊपर आग का रोशन शौला और धुवाँ छोड़ा

مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

जाएगा। फिर तुम मुक़ाबला नहीं कर सकोगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً

किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर जब आसमान फट पड़ेगा, तो वो गुलाबी हो जाएगा तेल की तलछट की

كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

तरह। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर उस दिन उस के

لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

गुनाहों के मुतअल्लिक़ सवाल नहीं किया जाएगा किसी इन्सान और किसी जिन से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ

अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? मुजरिमों को पेहचान लिया जाएगा उन की अलामतों से,

فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

फिर उन्हें पकड़ा जाएगा पेशानी के बालों और क़दमों से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا

में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? (कहा जाएगा के) ये वो जहन्नम है जिस को मुजरिम

وقف لازم

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

झुठलाते थे। वो चक्कर लगा रहे होंगे जहन्नम के दरमियान और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान।

ع ٢

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?और उस शख्स के लिए जो अपने रब

رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾

के सामने खड़ा होने से डरे दो जन्नतें होंगी। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

झुठलाओगे? वो कसीर शाखों वाले होंगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उन दोनों में दो चशमे चल रहे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में हर मेवे की दो दो क़िस्में होंगी।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो टेक लगाए हुए

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

होंगे तख्तों के ऊपर जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों जन्नतों के मेवे क़रीब लटक रहे होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नीची

الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

निगाहों वाली हूरें होंगी, जिन को न किसी इन्सान ने छुवा उन से पेहले और न किसी जिन ने।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? गोया के वो हूरें याकूत

وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾

और मूंगे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ

नेकी का बदला तो सिवाए नेकी के और क्या होगा? फिर (ऐ इन्सानो

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٦١ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उन दोनों जन्नतों के अलावा

جَنَّتٰنِ ۚ ۝٦٢ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ ۝٦٣

और भी दो जन्नतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ ۝٦٤ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ ۝٦٥

दोनों गेहरे सब्ज़ सियाही माइल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ ۝٦٦ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उन में उबलते हुए दो चशमे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस

تُكَذِّبٰنِ ۝٦٧ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۚ ۝٦٨

किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में मेवे हैं और खजूर हैं और अनार।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ ۝٦٩ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नेक खूबसूरत

حِسَانٌ ۚ ۝٧٠ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ ۝٧١ حُوْرٌ

औरतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो हूरें

مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ۚ ۝٧٢ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

हैं जो खैमों में ठेहरी हुई हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस

تُكَذِّبٰنِ ۚ ۝٧٣ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ ۝٧٤

नेअमत को झुठलाओगे? जिन को उन से पेहले किसी इन्सान ने छुवा नहीं और न किसी जिन ने।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٧٥ مُتَّكِـِٕيْنَ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो जन्नती टेक

عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۚ ۝٧٦ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

लगाए हुए होंगे सब्ज़ अजीब खूबसूरत मस्नदों पर। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٧٧ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ

रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तेरे जलाल और अज़मत

ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۚ ۝٧٨ ع ٣ ١٣

वाले रब का नाम बड़ा बाबरकत है।

اٰيَاتُهَا ٩٦ (٥٦) سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٦) رُكُوْعَاتُهَا ٣

और ३ रूकूअ हैं सूरह वाक़िआ मक्का में नाज़िल हुई उस में ९६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وقف لازم

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢

जब वाक़ेअ होने वाली क़यामत वाक़ेअ होगी। जिस के वाक़ेअ होने में कोई झूठ नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۝٤

वो पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली है। जब ज़मीन लरज़ उठेगी कपकपाती हुई।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۝٦

और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। फिर वो उड़ता हुवा गुबार बन जाएंगे।

وَّ كُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝٧ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ

और तुम तीन जमाअतें बन जाओगे। फिर दाईं तरफ वाले,

مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ

दाईं तरफ वाले कितने अच्छे हैं! और बाईं तरफ वाले,

مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝١٠

क्या ही बुरे बाईं तरफ वाले! और सबक़त करने वाले तो सबक़त करने वाले ही हैं।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢ ثُلَّةٌ

यही मुक़र्रबीन हैं। जो जन्नाते नईम में होंगे। वो ज़्यादातर

مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَ قَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٤

तो अगले लोगों में से होंगे। और पीछे वालों में से थोड़े होंगे।

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦

वो ऐसे तख़्तों पर टेक लगाए हुए होंगे, जो सौने के तारों से जड़े हुए होंगे। वो उन पर टेक लगाए आमने

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِاَكْوَابٍ

सामने बैठे होंगे। उन पर चक्कर लगा रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। प्याले

وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَّا يُصَدَّعُوْنَ

और जग और ग्लास ले कर ऐसे चशमे से, जिस से न सरदर्द

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾

होगा और न बकना होगा। और उन के पसन्दीदा मेवे ले कर।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾

और परिन्दों का गोश्त जो उन को मरगूब हो। और बड़ी आँखों वाली खूबसूरत हूरें होंगी।

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُوِءِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا

छुपाए हुए मोतियों की तरह। उन के आमाल के बदले

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾

में। वो उस जन्नत में न लग्व बात सुनेंगे और न गुनाह की बात सुनेंगे।

اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ

मगर एक ही कलाम सुनेंगेः अस्सलामु अलैकुम, अस्सलामु अलैकुम। और दाईं तरफ वाले।

مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ

दाईं तरफ वाले क्या (खूब) हैं! कांटे साफ की हुई बेरियों में, और तेह बतेह

مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾

रखे केलों में, और लम्बे साए में, और बेहते हुए पानी में,

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

और बकस्रत मेवों में होंगे, जो कभी न खत्म होंगे न कभी मुमानअत होगी।

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾

और ऊँचे ऊँचे फर्शों में होंगे। हम ने उन हूरों को खास तौर पर बनाया है।

فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ

फिर हम ने उन को बाकिरा, बहोत ज़्यादा प्यार दिलाने वाली, हमउम्र बनाया है। असहाबे यमीन

الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَ ثُلَّةٌ ع ١٤

के लिए। वो बड़ी जमाअत अगले लोगों में से होगी। और बड़ी जमाअत पिछले लोगों में

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ

से होगी। और बाईं तरफ वाले। बाईं तरफ वाले क्या (ही

الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ

बुरे) हैं! वो लू में होंगे और गर्म पानी में होंगे। और धुंवें के साए में

يَّحْمُوْمٍ ۙ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۚ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا

होंगे। न ठन्डा होगा और न अच्छा होगा। इस लिए के वो

قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۖ﴿٤٥﴾ وَ كَانُوْا يُصِرُّوْنَ

उस से पेहले खुशहाल थे। और बड़े गुनाहों पर

عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۚ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا

इसरार करते थे। और वो केहते थे के क्या जब हम

مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿٤٧﴾

मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और हड्डियाँ हो जाएंगे तब हम क़ब्रों से उठाए जाएंगे?

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۚ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ

हम भी और हमारे बाप दादा भी। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन पेहले वाले

وَ الْاٰخِرِيْنَ ۙ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ

और पीछे आने वाले। सब के सब ज़रूर जमा किए जाएंगे एक मालूम दिन के मुक़र्ररा

مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ﴿٥١﴾

वक़्त में। फिर तुम ऐ गुमराह लोगो! झुठलाने वालो!

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ

तुम ज़रूर खाओगे ज़क्कूम के दरख्त से। फिर उसी

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ

से पेट भरोगे। फिर उस के ऊपर गर्म पानी

مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۭ﴿٥٥﴾ هٰذَا

पियोगे। फिर पियोगे प्यासे ऊँट के पीने की तरह। ये

نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۭ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ

उन की मेहमानी होगी हिसाब के दिन। हम ने तुम्हें पैदा किया,

فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ

फिर तुम तस्दीक़ क्यूं नहीं करते? क्या फिर तुम ने देखा वो मनी जो तुम डालते हो? क्या तुम

تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا

उसे पैदा करते हो या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

मौत मुक़द्दर कर दी और हम आजिज़ नहीं हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

इस बात से के हम तुम्हारे जैसे बदले में लाएं और तुम्हें पैदा कर दें उस शक्ल में जो तुम जानते भी नहीं।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

यक़ीनन तुम्हें मालूम है पेहली पैदाइश, फिर तुम नसीहत क्यूं हासिल नहीं करते?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ

क्या तुम ने देखा उस को जो तुम बोते हो? क्या तुम उस खेती को उगाते हो

اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

या हम खेती उगाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो हम उसे चूरा चूरा बना दें,

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर तुम बातें बनाते रेह जाओ। के यक़ीनन हम तो क़र्ज़दार बन गए। बल्के हम

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

तो महरूम हो गए। क्या तुम ने देखा वो पानी जो तुम पीते हो?

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तुम ने उस को बादल से उतारा या हम उतारने वाले हैं?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

अगर हम चाहें तो उसे खारा बना दें, फिर तुम शुक्र अदा क्यूं नहीं करते?

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ

क्या तुम ने देखा उस आग को जिसे तुम सुलगाते हो? क्या तुम ने उस का

شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا

दरख्त पैदा किया या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने उस को

تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ

नसीहत और मुसाफिरों के लिए फाइदे की चीज़ बनाया। फिर अपने अज़मत वाले रब

رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ ع ٣

के नाम की तस्बीह कीजिए। फिर मैं क़सम खाता हूँ सितारों के गुरूब की जगहों की।

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ

और यक़ीनन ये बड़ी क़सम है काश के तुम जानते। ये इज़्ज़त वाला

كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ

कुरआन है। वो महफ़ूज़ रखी हुई किताब में है (लौहे महफ़ूज़ में है)। उस को नहीं छूते

اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

मगर पाक फरिशते। ये रब्बुल आलमीन की तरफ से उतारा गया है।

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ

सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो? और तुम अपना हिस्सा

رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ

ये बनाते हो के तुम उसे झुठलाते हो? फिर जब रूह हलक़

الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ

तक पहोंचती है। और तुम उस वक्त का मन्ज़र देखते भी हो। और हम

اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

तुम से उस (मरने वाले) के ज़्यादा क़रीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ

फिर अगर तुम से हिसाब लिया जाना नहीं है, तो तुम उस रूह को वापस क्यूं नहीं लौटा देते अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾

सच्चे हो? फिर अलबत्ता अगर वो मुक़र्रबीन में से है,

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ

तो राहत होगी और खुशबूदार फूल होंगे। और जन्नते नईम होगी। और अलबत्ता

اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ

अगर वो असहाबे यमीन में से है, सो उस से कहा जाएगा के तेरे लिए अम्न व अमान है

مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

के तू असहाबे यमीन (दाहने वालों) में से है। और अलबत्ता अगर वो झुठलाने वाले गुमराहों

الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ

में से है, तो उस की मेहमानी की जाएगी गर्म पानी से। और आग में

جَحِيْمِ ﴿٩٣﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ

दाखिल करना है। यक़ीनन ये अलबत्ता हक़्क़ुल यक़ीन है। इस लिए

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾ ع ٣ ١٢

आप अपने अज़मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ (٩٤) (٥٧)

اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

और ४ रूकूअ हैं सूरह हदीद मदीना में नाज़िल हुई उस में २९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ

हिक्मत वाला है। उस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। वो ज़िन्दा करता है

وَ يُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ

और मौत देता है। और वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। वही पेहला है

وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

और आख़िर है और वही ज़ाहिर है और बातिन है। और वो हर चीज़ को ख़ूब जानने

عَلِيْمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

वाला है। उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ

छे दिन में, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो जानता है

مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

उन चीज़ों को जो ज़मीन में दाख़िल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ

से उतरती हैं और जो आसमान में चढ़ती हैं। और वो तुम्हारे साथ होता है

اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ

जहाँ तुम होते हो। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को ख़ूब देख रहा है। उस के लिए

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह की तरफ तमाम उमूर लौटाए

الْاُمُوْرُ ۝٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

जाएंगे। वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में

فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا

दाखिल करता है। और वो दिलों के हाल को खूब जानता है। ईमान लाओ

بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ

अल्लाह पर और उस के रसूल पर और तुम खर्च करो उन चीज़ों में से जिस में अल्लाह ने तुम्हें जानशीन

فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ

बनाया है। तो वो लोग जो तुम में से ईमान लाए और वो खर्च करते हैं उन के लिए बड़ा

كَبِيْرٌ ۝٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ

अज्र है। और तुम्हें क्या हुवा के तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह पर? हालांके रसूल

يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ

तुम्हें बुला रहे हैं ताके तुम अपने रब पर ईमान ले आओ और उस ने तुम से भारी अहद लिया है

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ

अगर तुम मोमिन हो। वही अपने बन्दे पर रोशन

عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

आयतें उतारता है ताके वो तुम्हें निकाले तारीकियों से

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩

नूर की तरफ। और यक़ीनन अल्लाह तुम पर बहोत ज़्यादा शफक़त वाला, निहायत महरबान है।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ

और तुम्हें क्या हुवा के अल्लाह के रास्ते में तुम खर्च नहीं करते? हालांके अल्लाह ही के लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ

आसमानों और ज़मीन की मीरास है। तुम में से बराबर नहीं हैं वो जिन्हों ने खर्च किया

مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً

फतह से पेहले और क़िताल किया। ये ज़्यादा भारी दरजात वाले हैं

مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا

उन की बनिस्बत जिन्हों ने उस के बाद खर्च किया और उस के बाद क़िताल किया। और तमाम से

وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠ ع

अल्लाह ने अच्छा वादा कर रखा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ

कौन है जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दे, फिर उस के लिए अल्लाह कई गुना

لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝١١ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ

बढ़ाए और उस के लिए अच्छा सवाब है। जिस दिन आप देखोगे ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ

और ईमान वाली औरतों को के उन का नूर उन के आगे और उन के दाएं चल रहा होगा,

بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(कहा जाएगा के) तुम्हें बशारत हो आज ऐसी जन्नतों की जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में ये

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ يَوْمَ

हमेशा रहेंगे। ये बड़ी कामयाबी है। जिस दिन

يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे के

انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا

तुम हमारा इन्तिज़ार करो के हम तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। (कहा जाएगा के) तुम अपने पीछे वापस लौट

وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ

जाओ, वहाँ तुम नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान में एक दीवार क़ाइम कर दी जाएगी, जिस के लिए दरवाज़ा

بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ

होगा। जिस के अन्दर में रहमत होगी और उस के बाहर उस से आगे अज़ाब

الْعَذَابُ ۝١٣ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا

होगा। वो उन को पुकारेंगे के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? वो कहेंगे

بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

क्यूं नहीं? लेकिन तुम ने अपने आप को खुद अज़ाब में डाला है और तुम हम पर बला के मुन्तज़िर रहे और तुम शक में रहे

وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ

और तुम्हें तमन्नाओं ने धोके में डाले रखा यहाँ तक के अल्लाह का हुक्म आ पहोंचा और तुम्हें अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ

धोके में डाले रखा धोकेबाज़ शैतान ने। फिर आज न तुम से फिदया लिया जाएगा

وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ

और न काफिरों से। तुम्हारा ठिकाना दोज़ख होगा। यही

مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ

तुम्हारा साथी है। और बुरी जगह है। क्या ईमान वालों के लिए इस का वक़्त नहीं

اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

आया के उन के दिल डर जाएं अल्लाह के ज़िक्र के सामने और उस हक़ के सामने जो

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

उतरा है और ये न हों उन लोगों की तरह जिन को उन से पेहले

مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ

किताब दी गई, फिर उन पर मुद्दत लम्बी हुई, फिर उन के दिल सख्त हो गए।

وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। खूब जान लो के अल्लाह

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ

ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के खुश्क हो जाने के बाद। यक़ीनन हम ने तुम्हारे लिए

الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ

आयतों को खोल खोल कर बयान किया है ताके तुम अक़लमन्द बन जाओ। यक़ीनन सदक़ा करने वाले मर्द

وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ

और सदक़ा करने वाली औरतें और जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दिया, तो उन के

لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

लिए उस क़र्ज़ को दुगना किया जाएगा और उन के लिए अच्छा सवाब होगा। और जो ईमान लाए अल्लाह पर

وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ

और उस के पैग़म्बरों पर, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

सिद्दीक़ और शहीद हैं। उन के लिए उन का अज्र और उन का नूर होगा। और जिन्हों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोज़ख़ी

الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ ع ٢

हैं। जान लो के दुन्यवी ज़िन्दगी तो सिर्फ खेल

وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ

और ग़फलत और ज़ीनत और आपस में फख्र करना है और आपस में एक दूसरे से

فِى الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ

बढ़ना है मालों में और औलाद में। उस बारिश की तरह जिस का सब्ज़ा किसानों को ख़ुश

نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ

करता है, फिर वो लेहलेहाने लगता है, फिर तू उस को देखता है पीला, फिर वो चूरा चूरा

حُطَامًا ؕ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ

बन जाता है। और आख़िरत में सख्त अज़ाब और अल्लाह की

مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ

तरफ से मग़फिरत और ख़ुशनूदी है। और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

मगर धोके का सामान। तुम दौड़ लगाओ अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

मग़फिरत और उस जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के

وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

बराबर है। जो ईमान वालों के लिए तय्यार की गई है जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर

وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

और उस के पैग़म्बरों पर। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है, उस को देता है जिसे चाहता है।

وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَاۤ اَصَابَ مِنْ

और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। कोई मुसीबत नहीं

مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ

पहोंचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में

اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ

मगर वो एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखी हुई है इस से पेहले के हम उस को पैदा करें। यक़ीनन ये

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۖ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى

अल्लाह पर आसान है। ताके तुम ग़म न करो उस चीज़ पर

مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

जो तुम से फौत हो गई और न इतराओ उस पर जो अल्लाह ने तुम्हें दिया। और अल्लाह

لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿٢٣﴾ اِۨلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

पसन्द नहीं करता हर इतराने वाले, फख्र करने वाले को। जो बुख्ल करते हैं

وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

और इन्सानों को बुख्ल का हुक्म देते हैं। और जो रूगरदानी करेगा

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا

तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। यक़ीनन हम ने

رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

अपने पैग़म्बर भेजे रोशन मोअजिज़ात दे कर और हम ने उन के साथ किताब उतारी

وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا

और तराज़ू उतारा ताके इन्सान इन्साफ को ले कर खड़े हो जाएं। और हम ने

الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ

लोहा उतारा जिस में सख्त क़ूव्वत है और इन्सानों के लिए दूसरे मनाफेअ भी हैं

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

और ताके अल्लाह जान ले उस को जो अल्लाह की और उस के पैग़म्बरों की नुसरत करता है बग़ैर देखे।

اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا ع ١٩

यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला है, ज़बर्दस्त है। यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रिसालत दे कर भेजा

وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ

और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और हम ने उन की औलाद में नुबूव्वत रख दी और किताब रख दी

فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

तो उन में से कुछ हिदायत पाने वाले हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى

फिर हम ने उन के पीछे हमारे पैग़म्बर भेजे और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا

को भेजा और हम ने उन को इन्जील दी। और हम ने उन लोगों के

فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ

दिलों में जिन्हों ने उन का इत्तिबा किया नर्मी और महरबानी रख दी। और रहबानीयत को

اِبْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ

उन्हों ने खुद ईजाद किया था, उस को हम ने उन पर लाज़िम नहीं किया था, मगर अल्लाह की खुशनूदी तलब करने के

اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ

लिए, फिर उस रहबानीयत की उन्हों ने रिआयत नहीं की जैसा के उस का हक़ था। फिर हम ने उन लोगों को

اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

जो उन में से ईमान लाए थे उन का सवाब दिया। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के पैग़म्बर पर,

يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا

वो तुम्हें अपनी रहमत से दोहरा अज्र देगा और तुम्हारे लिए नूर बना देगा

تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾

जिस को ले कर तुम चलोगे और तुम्हारी मग़फिरत करेगा। और अल्लाह बहोत बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ

ताके एहले किताब जान लें के वो किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं हैं

مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

अल्लाह के फ़ज़्ल में से और ये के फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वो उसे देता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ ع ٣

जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।